मात्रात्मक विधियों द्वारा भूगोल में क्रांति का वर्णन करें।

Q4. → भूगोल विषय का विकास एवं वर्तमान स्वरूप 18 वीं एवं 19 वीं सदि के भूगोलवेत्ताओं ने प्रदान किया। इनमें कान्ट, हम्बोल्ट, रिटर, रिचथोफन ने तथ्यात्मक भूगोल तथा हेटनर ब्लांश, ब्रून्श, हरबर्टशन आदि ने मानव भूगोल को नया रूप दिया। इसी प्रकार फ्रोस्ट, पेंक, किंग, गिलबर्ट, जॉनसन आदि ने भौतिक भूगोल को आगे बढ़ाया। जिससे कुछ समय के लिए भूगोल के विभाजन का खतरा उत्पन्न हो गया था किन्तु हर्बर्टनशन, ब्लांश, हेटनर, सावर, हार्टशोर्न आदि ने इसकी एकता बनाए रखने की चेस्टा की।

20 वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध तक भूगोल एक विषय के रूप स्थापित हो चुका था, किन्तु, इसका स्वरूप वर्णनात्मक (DISCRIPTIVE), गुणात्मक (QUALITATIVE) एवं साहित्यिक (LITERARY) था, फलतः भूगोलवेत्ता इस हिन भावना से ग्रसित थे कि भूगोल के पास अन्य प्राकृतिक विज्ञानों की तरह वैज्ञानिक सिद्धान्तों का अभाव है। सभी दूसरे भौतिक व सामान्य विज्ञानों में सिद्धांत निर्माण की एक दिर्घकालिक परंपरा रही है। भूगोलवेत्ताओं को यह भी शंका थी कि दार्शनिक अभिव्यक्तियों की प्रचूरता के कारण भूगोल की उपयोगिता ही कहीं समाप्त न हो जाए। भूगोल के समक्ष अपने आस्तित्व की रक्षा का प्रश्न था। आस्तित्व का बचना इस बात पर निर्भर करता था कि भूगोल के निष्कर्षों में कितनी

Scanned with CamScanner

सत्यता है। इसी कारण 20वीं शादि के उत्तरार्द्ध में विकसित देशों के भूगोल वेत्ताओं ने वर्णनात्मक एवं साहित्यिक भाषा की अपेक्षा गणितिय एवं सांख्यकिय भाषा के प्रयोग पर जोड़ जोर देना प्रारंभ कर दिया। फलतः अनुभाविक वर्णनात्मक भूगोल के स्थान पर अमूर्त प्रतिमानों के निर्माण (Abstract mathematical model) में काफी तेजी आ गई। गणितिय व अमूर्त प्रतिमानों के लिए अत्यंत कठोर विचारधारा और विकसित संख्यीकी तकनिक की आवश्यकता होती है। भूगोल के अध्ययन एवं विश्लेषण में गणितिय व सांख्यिक प्रावधानों के समावेश व प्रधानता ने क्रांतिकारी परिवर्तन ला दिया है। इसे ही मात्रात्मक, गणितिय या परिमाणात्मक क्रांति (QUANTATIVE REVOLUTION) कहा जाता है।

अनुमानतः 1960 ई० के बाद भूगोल में मात्रात्मक क्रांति आई। अतः पीटर गोल्ड ने तो आगे सैद्धान्तिक भूगोल को "THE TOMBSTONE OF EUROPEAN GEOGRAPHY" कह दिया। 1960 के दशक में डेविड, हार्वे, पीटर, सोनेन फिल्ड आदि ने मात्रात्मक एवं सांख्यिक विधियों का काफी प्रयोग किया।

भूगोल में मात्रात्मक विधियों के व्यवहारिक उपयोग पर पहला कार्य मकेकार्ट का 1956 में माना जाता है। इसके बाद 1963 में ग्रेगरी, 1968 में पीटर्स, 1971 में चिंकस्टोन व 1975 में स्मिथ के कार्यों ने तो भूगोल के स्वरूप को ही बदल डाला। अमेरीकन तथा यूरोपिय विश्वविद्यालयों के भूगोल के नवीन शोधों में इसका प्रभाव स्पष्ट दिखाई पड़ने लगा। इस भूगोल में मात्रात्मक विधियों के प्रयोग से क्रांति आने लगी।

इस कारण कोक व जान्सन की यह उक्ति काफी प्रसांगिक लगती है— "The new

Scanned with CamScanner